बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक-59 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अगस्त-सितंबर, 2016 | मूल्य - 5 रूपए

अनसुनी पुकार

यौन शोषण के खिलाफ युवाओं के विचार

बालकनामा ब्यूरो

दिन पर दिन यौन अत्याचारों की संख्या बढ़ती जा रही है और इसके शिकार सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी हो रहे हैं। चूंकि यह एक संवेदनशील विषय है, इसलिए बालकनामा के पत्रकारों ने यौन अत्याचारों की चर्चा बच्चों से करना ठीक नहीं समझा, लेकिन इस विषय पर पत्रकारों ने उन युवाओं से बात की जो पहले सड़क व कामकाजी बच्चे रह चुके हैं। इस चर्चा में कुछ युवक और युवतियों ने भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। चर्चा के लिए युवक और युवतियों को अलग अलग बैठाया गया और चर्चा के दौरान निम्न बातें निकलकर सामने आई.....

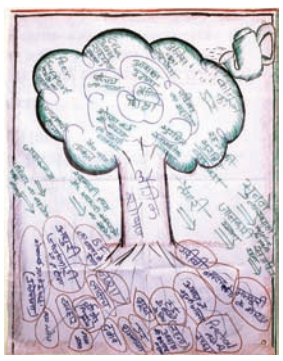

युवती - एक दिन मैं अपने दोस्त के घर जा रही थी कि अचानक एक बाइक वाले ने अपनी बाइक रोककर मुझसे कहा कि आपने कपड़ों के अंदर कुछ पहना है? उस वक्त मुझे बहुत बुरा लगा कि कोई भी व्यक्ति लड़कियों से कुछ भी बोलकर निकल जाएगा, क्या हमारा कोई अस्तित्व नहीं है।

युवक - रेलवे स्टेशन पर जब नए बच्चे आते हैं तो उनसे बड़े लड़के कहते हैं कि तुम स्टेशन पर तभी रह सकते हो जब तुम मुझे अश्लील हरकत करने दोगे और जब वह उनके साथ अश्लील हरकत करते हैं तो उससे पहले वह उस बच्चे को इतना नशा करवा देते हैं कि अश्लील हरकत होते समय बच्चे को दर्द महसूस न हो, उसे पता न चले, न ही वह किसी और से यह बात बता सके।

युवती - कुछ पिता ऐसे हैं जो अपनी बेटी के साथ भी यौन अत्याचार करते हैं और उसकी मां के साथ अश्लील हरकत करते वक्त बेटी को सोते से जगाकर कहते हैं देखो मैं क्या कर रहा हूं। यदि लड़की अपने पिता की बात नहीं मानती है तो वह मार मार कर अश्लील हरकत देखने पर मजबूर करते हैं। डर के मारे उसकी मां भी कुछ नहीं कहती, क्योंकि अगर उसने किसी से कुछ भी कहा तो उसका पति उसे घर से निकाल देगा।

युवक - यह हर जगह होता है सबके साथ होता है यह सच नहीं है कि सिर्फ लड़कियों के साथ ही यौन शौषण होता है, सड़क पर रहने वाले लड़कों के साथ भी यह होता है।

युवती - जब हम मार्किट और बस स्टैंड या फिर सार्वजनिक वाहन में सफर कर रहे होते हैं तो लोग इन जगहों पर भी अलग अलग प्रकार से हमारा शोषण करते हैं, जैसे हमारे व्यक्तिगत अंगो को छूकर, ऐसा नहीं कर पाते हैं तो हमारे व्यक्तिगत अंगों की तरफ घूर घूर कर देखकर, अपने व्यक्तिगत अंगों को दिखाकर या फिर अपने मुंह से अश्लील टिप्पणियां देकर तथा चेहरे पर गंदी अभिव्यक्ति करके।

युवक - परिवार में जो छोटी लड़कियां

शेष पृष्ठ 5 पर

कुत्तों की गणना करने वाली दिल्ली सरकार क्यों नहीं सुन रही स्ट्रीट चिल्ड्रन की गुहार?

बातूनी रिपोर्टर जावेद रिपोर्टर शन्नो, शम्भू

राजधानी दिल्ली में सात साल बाद कुत्तों की गणना का मामला फिर से सुर्खियों में है। ज्ञातव्य हो कि कॉमन वेल्थ गेम्स के दौरान दिल्ली सरकार ने सड़कों पर रहने वाले आवारा कुत्तों की गणना करवाने का निर्णय लिया था और एक बार फिर से सरकार द्वारा कुत्तों की बढ़ती संख्या और उनकी सुरक्षा की दृष्टि से उनकी गणना करने निर्णय लिया गया।

जब बढ़ते कदम के सदस्यों को इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने कहा कि हमें इस बात की खुशी है कि हमारी सरकार ने दक्षिणी दिल्ली में कुत्तों की गणना करने का निर्णय लिया है, लेकिन दुख की बात यह है कि सरकार को जितनी चिंता सड़कों पर रहने वाले कुत्तों की संख्या की है, उतनी चिंता सड़कों, स्टेशनों और फुटपाथों पर रहने वाले बच्चों की नहीं है, जिनका जीवन बद से बदतर होता जा रहा है और लोग हमारे साथ जानवरों से भी बुरा व्यवहार करते हैं। सड़कों पर रहने वाले हम बच्चे तो आज भी गिनती में नहीं आते हैं और न ही सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना के लिए सरकार द्वारा कोई पहल की गई है। आपको जानकर हैरानी होगी कि बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों ने 4 नवंबर, 2015 को दिल्ली में सड़क एवं कामकाजी बच्चों की संख्या का पता लगाने के लिए एक सैंपल सर्वे भी किया था।

गणना के दौरान 1320 बच्चे गिनती में आए, जिनमें से 618 बच्चों से व्यक्तिगत रूप से मिले (उन्होंने गलत पर्ची कटवाई) और 483 बच्चों ने बात करने से मना कर दिया। 219 बच्चे ऑब्जरवेशन विजिट के दौरान पाए गए, जिनके चेहरे रोज बदलते रहे और वो एक स्थान से दूसरे स्थान पर काम करने जाने वाले बच्चे थे।

कुल 618 बच्चे, जिनमें 220 लड़कियां और 398 लड़के सड़कों पर रह रहे हैं। इनमें 0 से 5 वर्ष के 99 बच्चे, 5 से 10 वर्ष के 241 बच्चे, 10 से 15 वर्ष 203 बच्चे और 15 से 18 वर्ष के 73 बच्चे शामिल थे। ज्यादातर बच्चे 6 से 15 वर्ष की आयु सीमा के बीच के थे।

बाल मजदूरी के शिकार 155 बच्चे कबाड़ा बीनने वाले, 64 बच्चे भीख मांगने वाले, 64 बच्चे घुमंतू, 52 बच्चे रेस्टोरेंट व ढाबे में काम करने वाले थे। इसके अलावा 35 बच्चे कोठियों में काम करने वाले, 15 बच्चे फूल, 13 बच्चे गुब्बारे, 7 बच्चे मूंगफली, 3 बच्चे कपड़े इत्यादि बेचने वाले थे।

342 बच्चों ने अपने काम करने के समय के बारे में जवाब दिया, जिसमें 50 प्रतिशत बच्चे 5 से 9 घंटे, 23 प्रतिशत 9 से 15 घंटे काम करते थे।

शेष पृष्ठ 8 पर

चिकनगुनियां से सड़क एवं कामकाजी बच्चे कैसे कर रहें हैं अपना बचाव

बातूनी रिपोर्टर किशन, रिपोर्टर चेतन

पश्चिमी दिल्ली के नेहरू कैंप के 10 बच्चे चिकनगुनियां से बीमार हो गए थे, लेकिन उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि वह अपना इलाज करा सकें। क्योंकि यह बच्चे खुद काम करके घर का खर्चा चलाते हैं। जब घर में काम करने वाला ही बीमार पड़ जाए तो घर का खर्चा कैसे चलेगा और दवाई गोली कहां से आएगी। सरकारी अस्पतालों में भी इतनी सुविधा नहीं है। वह भी बुरी तरह से चिकनगुनियां के मरीजों से भरे पड़े हैं। चिकनगुनिया की चपेट में आए बड़े व्यक्ति और बच्चे चल फिर भी नहीं पा रहें हैं तो घंटों लाइन में कैसे खड़े रहकर वह दवाई ले पाएंगे। इसी कारण बच्चों ने अपनी दवा दारू नहीं की और अपने घर में ही बीमारी की हालत में पड़े हुए थे और उनके माता पिता के पास भी इतने पैसे भी नहीं थे कि वह अपने बच्चों का इलाज किसी प्राईवेट क्लीनिक में करा पाएं।

यह दशा देख वहां रहने वाले कुछ बच्चों ने अपने आस पास से हर एक व्यक्ति से 10-10 रुपए जमा किए। पैसे जमा करने के बाद इन दस बच्चों को प्राईवेट क्लीनिक ले जाया गया और दवा कराई गई। इस तरह इन 10 बच्चों को चिकनगुनियां से थोड़ी राहत मिली। अब यह बच्चे सुरक्षित हैं। इसके साथ ही ये बच्चे चिकनगुनियां से निपटने के लिए कुछ और भी उपाए कर रहें हैं। बच्चों का कहना है कि हम इतने नशे में रहते हैं कि हमारे शरीर में यदि मच्छर

शेष पृष्ठ 6 पर

संपादकीय

प्रिय दोस्तों,

हम सभी पाठकों को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने बालकनामा अखबार को इतना प्यार दिया और इतना सराहा। दोस्तों हमेशा की तरह इस बार भी हमारा प्रयास रहा है कि हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ घट रही घटनाओं और समस्याओं की सच्ची खबरें आप तक पहुंचा पाएं और उनकी बात आपके बीच रख पाएं।

इस बार के अंक में सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने सरकार के सम्मुख अपनी गणना का मुद्दा उठाया है और उनसे पूछा है कि जब दिल्ली में रहने वाले कुत्तों की गणना सरकार करवा सकती है तो सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना से क्यों पीछे हटती है ?

इसी के साथ ही हमने तेजी से फैल रहे चिकनगुनिया और डेंगू की वास्तविक स्थिति भी आपके सम्मुख रखी है। हर बार की तरह इस बार भी हम बच्चों के जीवन से जुड़ी वास्तविक घटनाओं को आपके बीच लेकर आ रहे हैं और बच्चों के बहादुरी के कारनामें भी लेकर आए हैं, ताकि आप उनका हौसला बढ़ाएं।

हम आपके बहुत आभारी होंगे यदि आप बालकनामा को किसी भी प्रकार से (छोटा या बड़ा या वित्तीय) सहयोग करें। आप नीचे दिए गए पते और balaknamaeditor@gmail.com इस मेल आई डी पर हमसे संपर्क कर सकते हैं।

पुल के नीचे सोने से लगता है डर

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा के पत्रकार ने मूलचंद फ्लाई ओवर के नीचे रहने वाली लड़कियों के साथ सपोर्ट ग्रुप मींटिग की। पत्रकार ने सभी लड़कियों से मीटिंग के दौरान वहां पर होनी वाली परेशानियों पर चर्चा की। जो लड़कियां पूरे दिन अपने परिवार के गुजारे के लिए लालबत्ती पर काम करती हैं और फ्लाई ओवर के नीचे रात को सोती हैं तो उनको बहुत परेशानी आती है। 16 वर्षीय सपना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम लड़कियां यहां पर पूरे दिन काम करती हैं और रात को यहीं पर सोती हैं। हमें मजबूरन यहां सोना पड़ता है, क्योंकि हमारे रहने के लिए कोई सुरक्षित जगह नहीं है और न ही हमारे पास इतने पैसों का जुगाड़ हो पाता है, जिससे हम किराए के मकान में रह सकें। अगर हमारे पास पैसे होते भी हैं तो कोई भी हमें कमरा किराए पर नहीं देता। लेकिन हमें कोई व्यक्ति यदि कमरा किराए पर दे भी दे तो हमारे पास इतना पैसा नहीं है कि हम किराए का भुगतान कर सकें। इसलिए मजबूरन हमें कामकाज करने के बाद पुल के नीचे ही सोना पड़ता है। पर पुल के नीचे सोते समय हम लड़कियों को बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ता है, जैसे बड़े लड़के शराब पीकर इधर से उधर मंडराते रहते हैं। वह हम लड़कियों को देखकर उल्टा सीधा बोलते रहते हैं।

14 वर्षीय काजल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम लड़कियां पुल के नीचे सोती हैं। यहां बिल्कुल खुला होता है, जो भी लोग उस सड़क से गुजरते हैं वह हम लड़कियों को गलत नजर से देखते हैं और कई बार नशा करने वाले लड़के हम लड़कियों के पास रात को सो जाते हैं। इसलिए हम लड़कियों को हमेशा डर लगा रहता है कि कहीं हम लड़कियों के साथ कुछ गलत काम न हो जाए। पत्रकार ने पूछा कि आप लोगों ने कभी पुलिस को यह बात क्यों नहीं बताई तो 15 वर्षीय प्रीती (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम पुलिस वालों से क्या शिकायत करें, वह तो खुद हम लड़कियों को उल्टा सीधा बोलते रहते हैं और रात को जब हम सो जाते हैं तो वह भी हमें लात मारकर वहां से भगाते हैं। ऐसी स्थिति में लड़कियां अपने परिवार के साथ कहां जाएंगी। पुल के नींचे रहने वाली और काम करने वाली लड़कियों ने पत्रकार से कहा कि सरकार हम जैसी गरीब लड़कियों और बच्चों के रहने के लिए कोई व्यवस्था करे। सरकार द्वारा जगह जगह पर रैन बसेरा बने हुए हैं वैसे हम लड़कियों के लिए सुविधाएं हों, जिससे हम महफूंज रह सकें। हमारी सरकार से यही गुजारिश है कि हमें सुरक्षा प्रदान की जाए।

फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों को पीना पड़ रहा है पौधों में डालने वाला गंदा पानी

बातूनी रिपोर्टर कैलाश, रिपोर्टर शम्भू

मूलचंद फ्लाई के नीचे रहने वाले बच्चे जो लाल बत्ती पर अपने गुजारे के लिए काम करते हैं। उन बच्चों के साथ बालकनामा के पत्रकार ने सपोर्ट ग्रुप मींटिग की। मीटिंग के दौरान बच्चों ने बताया कि भैया यहां पर हम बच्चों को पीने के पानी की बहुत परेशानी होती है। 15 वर्षीय आकाश ने बताया कि यहां पर हम बच्चे मजबूरी में रहते हैं। हम बच्चों को दूर दूर तक पानी भरने के लिए जाना पड़ता है। यहां पर दिल्ली जल बोर्ड की एक सप्लाई मशीन है और वहीं से हम बच्चे पीने के लिए और नहाने धोने के लिए पानी भरकर लाते हैं। लेकिन दिल्ली जल बोर्ड की सप्लाई मशीन पर एक समस्या है, जब हम बच्चे वहां से पानी भरते हैं तो कभी कभी हमें बिजली का करंट लग जाता है। इसलिए हम बच्चों को हमेशा डर लगा रहता है कि हम बच्चों को कहीं इस बिजली के करंट के चलते किसी दुर्घटना का शिकार न होना पड़े। इससे हमारी जान को भी खतरा हो सकता है।

अशोक ने बताया कि अभी हाल ही की बात है कि दो दिन पहले 12 अगस्त को बहुत तेज बारिश हुई थी। तब हम बच्चों में से एक लड़की कविता दिल्ली जल बोर्ड सप्लाई मशीन से पानी भरने के लिए गई थी। जैसे ही कविता वहां पर पानी भरने के लिए पहुंची कि अचानक कविता को बहुत तेज बिजली का करंट लग गया और वह गिर पड़ी। यह दुर्घटना देखकर हमारे माता पिता बहुत डर गए। इसलिए वह अब हम बच्चों को पानी भरने के लिए वहां नहीं जाने देते हैं। लेकिन पीने के लिए पानी कहीं से तो लाना ही पड़ेगा। इस वजह से हम बच्चों को दूर दूर इधर उधर पानी की खोज में भटकना पड़ता है और पार्क के अंदर जो पेड़ पौधों में पानी लगाया जाता है, उसका पानी हमें पीना पड़ता है। वह पानी बहुत खारा होता है जो पीने में बिल्कुल अच्छा नहीं लगता और शायद इस पानी की वजह से ही हम बीमार भी पड़ रहे हैं। यह जानने के बाद पत्रकार ने बच्चों से कहा कि दिल्ली जल बोर्ड मशीन कहां पर है मुझे ले चलो। वहां पहुंचकर पत्रकार ने जल बोर्ड की सुरक्षा करने वाले कार्यकर्ता से इस बारे में पूछताछ की तो उन्होंने बताया कि जब काफी तेज बारिश हो जाती है तो बारिश की वजह से मशीन में पानी भर जाता है। ऐसे में अकसर मशीन में करंट आ जाता है। लेकिन दिल्ली जल बोर्ड की सप्लाई मशीन का पानी हर घर में सुरक्षित पहुंचता है।

शौचालय की सुविधा न होने के कारण समय पर स्कूल नहीं जा पाते बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

दिल्ली में आज भी कई इलाके ऐसे हैं जहां किसी भी प्रकार की कोई सुविधा नहीं है और तो और उन इलाकों में शौचालय भी नहीं बने हुए हैं। वाल्मीकि कैंप में सिर्फ एक ही शौचालय बना हुआ। लोगों की इतनी संख्या होने की बावजूद लोग खुले में ही शौच करते हैं। ऐसी ही एक कॉलोनी की हम बात कर रहे हैं, जो वेस्ट दिल्ली वाल्मीकि कैम्प के शकूर पुर के नजदीक है। इस कॉलोनी में छोटे बच्चे और लड़कियों को बहुत परेशानी होती है, क्योंकि वाल्मीकि कैम्प के नजदीक रेलवे लाइन है इसलिए सभी लोग रेलवे लाइन के पास खुले में शौच करने के लिए जाते हैं। वहां पर एक ही शौचालय है, जिसमें सुबह 5 बजे से लेकर 11 बजे तक भीड़ लगी रहती है और वाल्मीकि कैम्प में कुछ बच्चे हैं जो सरकारी स्कूल में पढ़ाई करने जाते हैं। यह बच्चे अपने स्कूल में अकसर समय पर नहीं पहुंच पाते हैं। इसलिए स्कूल के अध्यापक से उन्हें बहुत डांट खानी पड़ती है। क्योंकि वाल्मीकि कैंप में रहने वाले सभी बच्चे शौच करने के लिए रेलवे लाइन पर जाते हैं पर जब लड़कियां रेलवे लाइन पर शौच करने जाती हैं तो खासतौर पर उन्हें बहुत समस्या होती है, क्योंकि जब लड़कियां रेलवे लाइन पर शौच करती हैं तो बड़े बड़े लड़के उन्हें छुप छुपकर देखते हैं। वो लड़के शराब पीकर रेलवे लाइन के पास आ जाते हैं और हमें गाली देते हैं।

इस रोज रोज की समस्या से लड़कियां और छोटे बच्चे बहुत परेशान हैं। इस समस्या के साथ वहां पर एक और दुर्घटना हो रही है क्योंकि रेलवे लाइन के पास एक जगह जिसे लोग खंडहर के नाम से जानते हैं वह खंडहर वाली जगह बहुत दिनों से वीरान पड़ी हुई है। वो जगह एकदम सुनसान रहती है। अगर कोई बच्चा इस तरफ जाता है तो उनका अपहरण कर लिया जाता है। वहां से बच्चे गायब कर दिए जाते हैं। इसलिए बच्चे यहां हमेशा डर कर रहते हैं कि कहीं हमें बाहर खुले में शौच करते समय अपहरण न कर लिया जाए। शौच न होने की वजह से बच्चों और लड़कियों को अलग अलग समस्याओं का सामना कर पड़ रहा है। बच्चे चाहते हैं कि उनके लिए वाल्मीकि कैंप में जल्द से जल्द शौचालय बनवाएं जाएं ताकि यह बच्चे शोषण का शिकार न हों और वैसे भी खुले में शौच करने से बीमारियां पैदा होती हैं और वातावरण भी गंदा होता है। स्वच्छ भारत अभियान के चलते हमारी इस समस्या का समाधान हों और लड़कियों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उनकी मदद की जाए, जिससे समाज में रहने वाली लड़कियां सुरक्षित रह सकें।

शेल्टर होम में नहीं मिलता बच्चों को अच्छा खाना

बालकनामा ब्यूरो

बालकनामा के पत्रकार ने उन बच्चों से मुलाकात की जो पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर रहते हैं और वहीं पर काम करते हैं। इनमें कुछ बच्चों ऐसे भी हैं जो शेल्टर होम में भी रहकर आ चुके हैं। 14 वर्षीय अजीत (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भैया स्टेशन पर ज्यादातर यह समस्या हो रही है कि हम बच्चे स्टेशन पर रहकर जैसे तैसे अपना गुजारा करने के लिए काम करते हैं और यहीं पर पूरे दिन रहते हैं। इसलिए शेल्टर होम के कार्यकर्ता हम बच्चों को जबरदस्ती उठाकर ले जाते हैं और होम में डाल देते हैं। यह हमारे लिए अच्छी बात है कि हम बच्चों को स्टेशन से हटाकर एक होम में रखा जाता है। लेकिन जिस भी शेल्टर होम में हम बच्चों को रखा जाता है, वहां हम बच्चों को बहुत परेशानी होती है।

विकास (परिवर्तित नाम) ने बताया कि मुझे भी पहले शेल्टर होम में लेकर गए थे। लेकिन मैं वहां से भागकर आ गया। क्योंकि वहां पर हम बच्चों को जो खाना दिया जाता है, वह खाना बिल्कुल पौष्टिक नहीं होता और जो दाल मिलती है वह दाल एकदम पानी की तरह होती है। देखने से लगता है कि वो दाल नहीं पानी है और जो सुबह सुबह बच्चों को पीने के लिए दूध देते हैं, उस दूध में भी पानी ज्यादा दूध कम होता है। अगर इस बात की शिकायत हम बच्चे होम के कार्यकर्ता से करते हैं कि हम यह खाना नहीं खाएंगे तो वह लोग हम बच्चों को डांटते हैं और कड़क आवाज में कहते हैं कि खाना है तो खाओ या फिर भूखे रहो। इसलिए हम बच्चे सेंटर होम से भागकर आ जाते हैं और वहां दोबारा नहीं जाना चाहते हैं। क्योंकि शेल्टर होम से हमें स्टेशन की जिंदगी अच्छी लगती है। स्टेशन पर कोई हमें डांटता नहीं है और स्टेशन पर कूड़ा कबाड़ा इकट्ठा करके कम से कम हम बच्चों को अच्छा खाना मिल जाता है और वो खाना हमारे मन पसंद का होता है। साथ में बहुत स्वादिष्ट भी होता है। जिस खाने को हम भरपेट खाते हैं। पत्रकार ने बच्चों से पूछा कि आपको कैसा शेल्टर होम चाहिए? विकास ने बताया कि भैया हम बच्चों को ऐसा शेल्टर होम चाहिए, जिसमें खाना.पीना अच्छा हो

और वहां के कार्यकता हम बच्चों से प्यार से बात करें और हमारी बातों को सुनें। अगर ऐसा शेल्टर होम हम बच्चों को मिलेगा तो बच्चे शेल्टर होम से नहीं भागेंगे।

राजस्थान से आए बच्चे फूलों का गुलदस्ता बेचकर कर रहे हैं गुजर बसर

बातूनी रिपोर्टर किशन, रिपोर्टर शम्भू

दिल्ली की लालबत्ती पर छोटे छोटे काम करने वाले बच्चों से पत्रकारों ने बात की तो पता चला कि जो छोटे बच्चों से या तो भीख मंगावाने का काम कराया जाता है या फिर फूल बेचने का काम। ये छोटे छोटे बच्चे आपको अकसर लालबत्ती पर हांथो में फूलों का गुलदस्ता लिए बेचते हुए दिखाई देते होंगे। 15 वर्षीय भंवर (परिवर्तित नाम) से पता चला कि यह सभी बच्चे राजस्थान के रहने वाले हैं।

जब राजस्थान में कोई कामकाज नहीं चलता है तो इनके माता पिता इन्हें दिल्ली लेकर आ जाते हैं। यह बच्चे राजस्थान में भी काम करते हैं। वहां पर एक साल में पांच मेला लगते हैं और उन मेलों में यह बच्चे जूता चप्पल रखने

वाला लकड़ी का स्टैंड खुद बनाते हैं और बनाकर मेलों में बचते हैं।

14 साल की सपना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम बच्चों के माता पिता मार्किट से लकड़ी खरीदकर लाते हैं और हम बच्चे खुद से ही चप्पल रखने का स्टैंड बनाते हैं। स्टैंड बनाते वक्त बच्चों को बहुत परेशानी भी होती है। जब बच्चे लकड़ी काटते हैं तो उसमें से बहुत धूल निकलती है, जिसके कारण बच्चों की छाती में दर्द, पेट दर्द में होता रहता है। इतनी कठिनाइयों का सामना करने के बाद बच्चे लकड़ी का स्टैंड बनाते हैं और मेले में 120 रुपए से 200 रुपए तक की कीमत का बेच देते हैं।

इस प्रकार एक मेले में हमारी कमाई दो हजार से तीन हजार रुपए तक की हो जाती है। पर जैसे ही मेला खत्म होता है उसके बाद हमारे कमाए हुए पैसे खत्म होने लगते हैं। इसलिए भाई बहनों को कई बार भूखे पेट भी सोना पड़ जाता है। इसी वजह से फिर हम पैसे कमाने के लिए दिल्ली की ओर रवाना हो जाते हैं क्योंकि दिल्ली में पहले से ही हमारे रिश्तेदार होते हैं जो काम कर रहे होते हैं। लाल बत्तियों पर हम गुलदस्ता बेचते हैं। सदर बाजार से गुलाब का फूल खरीदकर लाते हैं। सदर बाजार में एक बंडल की कीमत 20 रुपए है।

गुलदस्ता बनाकर जब हम बेचते हैं तो हमारा गुलदस्ता 50 से 120 रुपए तक की कीमत में बिक जाता है। गुलाब के फूलों का गुलदस्ता हमें दूसरे व्यक्ति बनाकर देते हैं और हम छोटे छोटे बच्चे अलग अलग लाल बत्ती पर घूम घूमकर फूलों का गुलदस्ता बेचते हैं। लाल बत्ती पर रोज बच्चे आते जाते रहते हैं। इनका कोई जगह ठिकाना नहीं होता है। यह बच्चे 10 से 12 संख्या में एक लाल बत्ती पर पाए जाते हैं। राहुल ने बताया कि हम बच्चों को इस काम में प्रतिमाह तीन हजार रुपए हमारा मालिक देता है।

चोरी करने का झूठा आरोप झेल रहे कबाड़ा बीनने वाले बच्चे

बालकनामा ब्यूरो

लाजपत नगर सेंट्रल मॉर्किट एक जाना माना मार्किट है। यहां पर बड़े बड़े लोग शॉपिंग करने के लिए आते हैं और दूसरी ओर सड़क एवं कामकाजी बच्चे भी अपना पेट पालने के लिए उस मार्किट में कूड़ा कबाड़ा चुनते हैं। लेकिन इन बच्चों का इस मार्किट में काम करना दूभर हो रहा है। जब यह बच्चे मार्किट में काम करते हैं तो लोग इन्हें देखते ही सतर्क हो जाते हैं और इन बच्चों को उल्टा सीधा बोलते हैं। बेशक यह बच्चे गन्दे कपडे.पहने होते हैं, कूड़ा कबाड़ा उठाते हैं। मगर यह बच्चे कोई गलत काम नहीं करते, बल्कि अपनी मेहनत मजदूरी करके दो पैसे कमाते हैं। तब जाकर वह अपना पेट भरते हैं।

बालकनामा के पत्रकार को 15 वर्षीय सलीमा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भैया यहां पर बच्चों के साथ बहुत गलत हो रहा है। जो बड़े बड़े लड़के हैं वह इस मार्किट के अंदर ईधर से उधर घूमते रहते हैं और मार्किट के अंदर पब्लिक की जेब काटते हैं, चोरी चकारी करते हैं। मगर हमारे गन्दे कपड़े देख और कूड़ा कबाड़ा चुनते देखकर पुलिस वाले हम बच्चों पर शक करते हैं। वो हम बच्चे से कहते हैं कि तुम लोग ही इस मार्किट में काम करते हो, तुम्हारे आलावा चोरी और कोई नहीं करता। मार्किट में काम करने वाली एक बच्ची सोफिया (परिवर्तित नाम) ने भी कहा कि किसी भी व्यक्ति की मार्किट में अगर जेब कट जाती है तो उसकी जेब काटने के इल्जाम पुलिस वाले हम बच्चों को ही पकड़कर पुलिस थाने ले जाते हैं और थाने में ले जाने के बाद हम से पूंछताछ करते हैं। लेकिन सच बात तो यह है कि हम बच्चे चोरी नहीं करते हैं। मार्किट में बच्चे अपना पेट पालने के लिए कूड़ा कबाड़ा चुनते हैं तो बच्चे चोरी क्यों करेंगे। चोरी तो बड़े बड़े लड़के करते हैं जो बाहर से आते हैं।

फटे पुराने कपड़े सीकर छोटी लड़कियां कर रहीं है अपना गुजारा

बातूनी रिपोर्टर मनीषा, रिपोर्टर चेतन

कमला नेहरू कैम्प में 12 साल की लड़कियां सुबह स्कूल से आने के बाद दोपहर 2 बजे से लेकर शाम को 7 बजे तक फटे पुराने कपड़े सिलने का काम करती हैं। उन्हें एक फटा पुराना कपड़ा सिलने पर 10 रुपए मिलते हैं। जब ये लड़कियां मिट्टी के चूल्हे पर खाना बनाती हैं तो वह पढ़ाई करने के लिए अपने साथ अपनी कॉपी किताबें लेकर बैठती हैं। सिलाई करने वाली ये लड़कियां कैसे भी करके अपनी पढाई कर रही हैं। इनके परिवार की आर्थिक स्थिती ठीक नहीं है, जिस कारण इनके माता-पिता अपने बच्चों का सही ढंग से पालन पोषण नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए यह लड़कियां दूसरे लोगों के फटे पुराने कपड़े सिलकर अपना पढ़ाई का खर्चा निकालती हैं।

ये लड़कियां अधिकतर छुट्टी के दिन इस काम को करती हैं। ऐसे में इन लड़कियों पर लोगों का काम करने का

दबाव ज्यादा रहता है, क्योंकि रविवार के दिन सबकी छुट्टी होती है। इसलिए लड़कियां रविवार के दिन ही सुबह 9 बजे से लेकर शाम को 7 बजे तक अपनी सिलाई मशीन पर बैठी रहती हैं। इस वजह से इनके हाथ पैरों और आंखो में भी दर्द होने लगता है, जिससे इन्हें कुछ समय तक ठीक से दिखाई भी नहीं देता है। सिलाई करने के चलते इन्हें बहुत देर तक एक ही जगह पर बैठकर मशीन चलानी पड़ती है।

घरेलू कामकाज के चलते छोड़ दिया अपना स्कूल

बातूनी रिपोर्टर लक्ष्मी, रिपोर्टर ज्योति

पश्चिमी दिल्ली में रहने वाली लगभग 10 लड़कियों ने स्कूल जाना छोड़ दिया है। जब पत्रकार ने लड़कियों से इसका कारण पूछा तो 15 वर्षीय काजल ने बताया कि मेरे घर की स्थिति बहुत खराब हो गई थी, इसलिए मुझे स्कूल छोड़ना पड़ा क्योंकि मेरे पापा बहुत बीमार हो गए थे और वह काम करने के लिए नहीं जा पाते थे इसलिए घर का खर्चा चलाने के लिए मुझे अपना स्कूल छोड़ना पड़ा। 16 वर्षीय पूजा को स्कूल इसलिए छोड़ना पड़ा क्योंकि उसकी मम्मी को दूसरों के घरों में काम करने के लिए जाना पड़ता था और पूजा को ही अपने घर की देखरेख करनी पड़ती थी। जो समय बचता था उस में फैक्ट्री से बुरादा उठाने के लिए जाती थी। यह सब करने के बाद उसको समय ही नहीं मिल पाता था, क्योंकि वह बहुत थक जाती थी।

15 वर्षीय मीरा ने बताया कि मेरे माता पिता काम करने के लिए बाहर जाते थे। इसलिए मुझे घर पर अपने छोटे बहन भाई का ख्याल रखना पड़ता था और भाई बहन को स्कूल के लिए तैयार करने में ही उसका समय बीत जाता था। जब मैं स्कूल पंहुचती थी तो

हमारी अध्यापिका बहुत डांटती थी। इसलिए मैंने स्कूल जाना बन्द कर दिया। मैं अब घर के काम में व्यस्त हो गई हूं। मुझे पढ़ाई करने का समय ही नहीं मिलता है। 16 वर्षीय प्रवीना पहले सरकारी स्कूल में पढ़ाई करने जाती थी, लेकिन जब से उसके पिता जी ने शराब पीना शुरू किया प्रवीना का नाम स्कूल से कटवा दिया और पैसे कमाने के लिए एक कबाड़े की दुकान खोलकर उसे दे दी। अब वह सारा दिन कबाड़े की दुकान पर ही बैठी रहती है और दूसरे बच्चों से बोतलें खरीदती है। फिर प्रवीन बड़े कबाड़े वाले की दुकान पर गाड़ी से कबाड़ा भेजते हैं।

13 वर्षीय सोनिया ने बताया कि मैं पहले सरकारी स्कूल में पढ़ाई करने के लिए जाती थी। पर अपने माता पिता के कारण स्कूल छोड़ना पड़ा। क्योंकि हमेशा वह मुझे ताने मारते थे कि तू पढ़ाई लिखाई करके इंजिनियर बनेगी क्या? इसलिए मैंने पढ़ाई छोड़ दी और जो काम मेरे माता पिता करने के लिए बोलते हैं मैं वही काम करती हूं। मेरा सपना था कि मैं एक अध्यापक बनूं पर अपने माता पिता की वजह से मेरा यह सपना अधूरा रह गया।

यह सभी लड़कियां अपने पूरे घर की जिम्मेदारी उठा रही हैं। यह सुबह 6 बजे से लेकर रात को 11 बजे तक लकड़ी का बुरादा छांटने का काम करती हैं। इन्हें पहले फैक्ट्री में जाकर लकड़ी का बुरादा लाना पड़ता है। उसके बाद यह इसकी छटाई करती हैं। इन्हें बुरादा छांटते वक्त बहुत परेशानी होती है। क्योंकि जिस फैक्ट्री से यह लकड़ी का बुरादा लाती हैं, वह फैक्ट्री 4 से 5 मंजिल की होती है। इन्हें सीढ़ियां चढ़ने उतरने में बहुत थकावट हो जाती है। कभी कभी सीढ़ियों से उतरते वक्त लकड़ी का बुरादा गिर जाता है तो मालिक बहुत गाली देते हैं। बुरादे की छटाई करते वक्त बुरादे की धूल मिट्टी इनकी आंख, नांक मुंह में जाती है, जिस कारण से इनका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता है।

भीख मांगने से बच्चे चाहते हैं आजादी

रिपोर्टर सौरभ

नोएडा सेक्टर 106 में बच्चे भीख मांगने का काम करते हैं। जब बच्चों से पूछा गया कि वे भीख क्यों मांगते हैं तो उन्होंने बताया कि हमारे खानदान में शुरू से भीख मांगने का काम चलता आ रहा है। हमारे माता-पिता भी भीख मांगने का काम करते हैं। 14 वर्षीय करन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम जैसे ही अपना होश संभालते हैं, तभी से ही हमारे माता-पिता हमारे हाथों में किताबों की जगह एक कटोरा थमा देते हैं और कहते हैं कि तुम जाओ भीख मांगकर पैसा कमाकर लाओ। इसलिए हम बच्चे भीख ही मांगते हैं पढाई क्या होती है, हमें पता तक नहीं है। हम बच्चे सारा दिन इधर से उधर घूम घूमकर भीख ही मांगते रहते हैं और भीख मांगते समय हम बच्चों को काफी परेशानी होती है क्योंकि लोग हम बच्चों को घृणा की नजरों से देखते हैं, गाली गलौज करते हैं। ऐसा लगता है कि हम बच्चे इस देश के हैं ही नहीं। ऐसी परिस्थिति में हम बच्चे क्या करें। उन्होंने बताया कि हम अपना पेट पालने के लिए मार्किट में जाते हैं और सब्जी बेचने वाले जो कुछ कच्ची खराब सब्जियां कूड़े में फेंक देते हैं, उन सब्जियां उठाकर हम ले आते हैं। उस सब्जी से हम खाना बनाते हैं, क्योंकि कभी कभी हमें भीख मांगने पर पैसे नहीं मिलते हैं तो हमारे पास इतने पैसे नहीं हो पाते जिससे हम अच्छा खाना खा सकें। इसलिए हम खराब सब्जियां उठाकर ले आते हैं और उसी से अपना गुजारा कर लेते हैं, लेकिन हमें भीख मांगना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता पर पेट पालने के लिए कुछ तो करना पड़ेगा इसलिए मजबूरन हमें भीख मांगना पड़ता है।

दुर्घटना के शिकार होते स्टेशन पर रहने और नशा करने वाले बच्चे

रिपोर्टर पूनम

आगरा कैन्ट रेलवे स्टेशन के नजदीक रह रहे बच्चे स्टेशन पर रोज काम करने आते हैं और सभी बच्चे कबाड़ा बीनने, गुटखा बेचने तथा ट्रेन में झाड़ू लगाने और भीख मांगने का काम करते हैं। स्टेशन पर रहने और काम करने वाले ये बच्चे दुर्घटना का शिकार हो रहे हैं। यह बात तब सामने आई जब पत्रकार पूनम ने बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मींटिग के द्वारा उनकी समस्याओं के बारे में पूछा। तब गोलू ने बताया कि हम बच्चे काम भी करते हैं और नशा भी करते हैं। लेकिन जब हम बच्चे नशा ज्यादा कर लेते हैं तो होश में नहीं रहते। नशे में हम ट्रेन की पटरी पर कबाड़ा बीनते हैं पटरी पर जब ट्रेन आती है हम बच्चे नशे की हालत में होते हैं गाड़ी दूर होती है लेकिन धीरे धीरे हमारे पास आ जाती है। ऐसे में हमें समझ नहीं आता कि हम कहां जाएं। कभी कभी ऐसा होता है कि कैंची में भी हम बच्चे फंस जाते हैं और इतने में ट्रेन हमारे पास आ जाती है। अब ऐसे स्थिति में अपने हाथ पैर बचाएं या अपनी जान।

कृष्णा ने बताया कि स्टेशन पर जब ट्रेन आती है तब हम बच्चे अपना सामान बेचने के लिए चलती ट्रेन में लटकते हैं। कई बार लटकते वक्त हमारा हाथ ट्रेन से छूट जाता है, हम गिर जाते हैं और सीधे पटरी के नीचे आ जाते हैं। ऐसे में लोग देखते रहते हैं और कोई मदद करने नहीं आता है। 14 वषीर्य राहुल ने बताया कि हम बच्चे किसी न किसी कारण अपने मम्मी पापा को छोड़कर घर से भाग जाते हैं क्योंकि वह हम से गलत व्यवहार करने लगते हैं। जिसके कारण हम घर से भागकर स्टेशन पर आ जाते हैं और अपना पेट पालने के लिए कबाड़ा बीनना तथा भीख मांगना पड़ता है। हम दूसरे बच्चे को देखकर नशा भी करने लगते हैं और आज के समय में हम बच्चे बहुत नशा करने लगे हैं क्योंकि हमें अपनी मम्मी पापा की याद आती है तो हम नशा कर लेते हैं। जब हमें खाना नहीं मिलता है तब भी नशा ही करते हैं। हम दिन पर दिन नशे के दलदल में फंसते जा रहे हैं, जिसके कारण आए दिन दुर्घटना के शिकार हो रहे हैं।

गांवों और कस्बों से बहला फुसलाकर लाए गए बच्चों से करा रहे हैं बाल मजदूरी

बातूनी रिपोर्टर मनोज, रिपोर्टर चेतन

पश्चिमी दिल्ली में रह रहे 70 बच्चे मध्य प्रदेश से आए हैं, जिनकी उम्र 12 साल से लेकर 16 साल तक है। इन बच्चों को मध्य प्रदेश से लाकर मकान व सीवर बनाने का काम करवाया जा रहा है। जब यह बच्चे काम पर जाते हैं तो इनके मालिक इन बच्चों के कंधों पर 50-50 किलो की सीमेंट की बोरी लाद देते हैं। यह बच्चे सुबह 9 बजे से लेकर शाम को 7 बजे तक काम करते हैं। मेहनत मजदूरी करने के बाद इन बच्चों को मालिक प्रतिदिन का 250 रुपए देते हैं।

इतने वजनदार कट्टे उठाने से बच्चों के छाती और कमर में बहुत दर्द होता है। काम में मन लगाने और ताकत के लिए ये बच्चे पान मसाला, तम्बाकू इत्यादि खाते हैं।

जब बालकनामा के पत्रकार ने काम करने वाले बच्चों से पूछा कि गुटका खाने से कैसे ताकत मिलती है तो 16 वर्षीय मनोज (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हमारे कंधो पर 50 किलो का सीमेंट का कट्टा लदा होता है। इसलिए हम गुटखा खाते हैं, जिससे हमारा दर्द कम हो जाता है क्योंकि जब हमें तेज दर्द होता है तो हम मुंह में लिए हुए गुटखे को तेजी से चबाने लगते हैं।

लेकिन दुख की बात यह है कि हम में से एक बच्चे को गुटखा खाने के कारण पेट में पथरी हो गई और वह बच्चा अब हमेशा बीमार रहता है। अब अगर वह बच्चा हल्का सा भी वजन उठा लेता है तो उसके पेट में बहुत तेज दर्द होने लगता है।

पत्रकार ने सभी छोटे छोटे बच्चों को समझाया कि गुटखा खाने से हमारी सेहत खराब होती है और हमारे शरीर में अलग अलग बीमारियां पैदा कर देता है। इसलिए बच्चों को गुटखा नहीं खाना चाहिए। जो भी बच्चा अभी गुटखा खा रहे हैं वह जल्द से जल्द गुटखा खाना छोड़ दें।

स्टेशन पर भटकती गुड़िया की गुड्डी ने की मदद

बालकनामा के पत्रकार की मदद से पहुंचाया शेल्टर होम

बातूनी रिपोर्टर गुड़िया, रिपोर्टर ज्योति

15 वर्षीय गुड़िया जो अपने परिवार के साथ मथुरा में रहती थी। लेकिन उसके माता पिता बहुत बीमार रहते थे। उस वक्त गुड़िया सिर्फ 12 साल की थी। एक दिन उसके माता पिता की ज्यादा तबियत खराब हो गई और वह मथुरा स्टेशन से गुड़िया के साथ डॉक्टर के पास दवाई लेने के लिए जा रहे थे कि गुड़िया के माता पिता की अचानक एक ट्रेन हादसे में मृत्यु हो गई। यह हादसा देखकर गुड़िया जोर जोर से स्टेशन पर रोने लगी, क्योंकि उसके दोनों माता पिता चल बसे थे और वह बिल्कुल बेसहारा हो गई थी। गुड़िया को समझ में नहीं आ रहा था कि वह अकेले अब क्या करे। वह दूर खडी बस रोए जा रही थी। उस समय किसी ने भी उसकी मदद नहीं की, लेकिन गुड़िया के आसपास रहने वाली एक मुंह बोली चाची ने गुड़िया को देखा और उसे चुपचाप अपने साथ ले गई। गुड़िया की जो मुंह बोली चाची थी वह बहुत बुजुर्ग थी लेकिन फिर भी उन्होंने गुड़िया को अपनी बेटी बनाकर एक साल तक अपने साथ रखा। पर कुछ दिनों बाद वह भी बीमार पड़ने लगी तो वह गुड़िया को छोड़कर कहीं और चली गई।

गुड़िया फिर से अकेली हो गई। फिर उसने अपना पेट पालने के लिए दूसरे के घरों में काम करने लगी। एक दिन वह ट्रेन में बैठकर दिल्ली आ गई। जब गुड़िया दिल्ली आई तो बहुत रो रही थी, क्योंकि दिल्ली उसके लिए एकदम अंजान थी। दिल्ली के रास्ते भी उसे नहीं पता थे। इसके बावजूद वह भटकते हुए एक बच्ची से टकरा गई जो हरजत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर कबाड़ा चुन रही थी। तभी उसने देखा कि वह लड़की रो रही है। गुड़िया ने गुड्डी को अपने बारे में सारी बातें बताई। फिर गुड्डी ने भी अपने बारे बताया कि मैं एक सेंटर में पढ़ाई करती हूं और रैन बसेरे में रहती हूं। मैं कबाड़ा चुनने का काम करती हूं। गुड्डी ने उससे पूछा कि तुम होम सेंटर जाना चाहती हो तो गुड़िया ने बताया कि मै वहां नहीं जाना चाहती। गुड्डी गुडिया को बालकनामा पत्रकार ज्योति के पास लेकर गई। पत्रकार ने गुड़िया को समझाया कि आप यहां पर रहोगे तो आप को कोई नहीं देखेगा और जब आप सेंटर होम में रहेंगे तो आप सुरक्षित रहेंगे। फिर दूसरे दिन पत्रकार ज्योति ने कार्यकर्ता सुरेंद्र जी को गुड़िया के बारे में बताया और उनकी मदद से गुड़िया को सेंटर होम भेज दिया।

न रेड लाइट न ट्रैफिक पुलिस का डर

बेरोक टोक चलती गाड़ियों की तेज रफ्तार का शिकार होते बच्चे

रिपोर्टर चेतन एवं ज्योति

पंजाबी बाग और रामपुर अशोका पार्क के बीच में लालबती न होने के कारण स्कूल जाने वाले और कामकाजी बच्चों को हर रोज तेज रफ्तार में चल रही गाड़ियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि अशोक पार्क वाले रोड पर रेड लाइट की सुविधा न होने के कारण उस रोड पर बहुत तेज वाहन चलते हैं। ऐसे में बच्चों का रोड पार करना बहुत मुशिकल हो रहा है। बच्चे रोड पार करने में बहुत डरते हैं कि कहीं उनके साथ कोई दुर्घटना न हो जाए क्योंकि गाड़ी चलाने वाले इतनी जल्दी में होते है कि उस रोड पर कोई भी गाड़ी रोकता ही नहीं है। इसके बाद भी बच्चे इस रोड को एक चुनौती की तरह हर रोज पार करते हैं। क्योंकि बच्चों का स्कूल का रास्ता और उनके काम पर जाने का रास्ता एक ही है। उन्हें किसी भी हाल में वह रोड पार करके ही अपनी जगह पहुंचना होता है। रोड पार करते समय अगर कोई बच्चा वाहन को देखकर लड़खड़ा जाता है तो वाहन चलाने वाले लोग उस बच्चे को ही गाली देकर निकल जाते हैं जैसे लगता है उल्टा चोर कोतवाल को डांटे।

उस पर भी सोने पर सुहागा यह

है कि इस रोड पर कोई ट्रैफिक पुलिस वाले भी नहीं होते हैं इसलिए लोग गाड़ी बहुत तेजी से चलाते हैं। अभी कुछ दिन पहले ही एक दुंघटना होने के कारण एक बहुत बड़ा हंगामा हुआ। स्कूल के समय में एक बाईक वाले ने एक स्कूल के बच्चे को टक्कर मार दी। यह देखकर सभी छात्र भड़क गए और उन्होंने हंगामा कर दिया। इसके बाद उस बच्चे को अस्पताल ले जाया गया अस्पताल वालों ने भी बच्चे को एडमिट करने से मना कर दिया। इस बात पर बच्चों ने नाराजगी जताई और गुस्से में सभी बच्चों ने नारे बाजी शुरू कर दी और बच्चों ने बड़े लोगों से बातचीत की तो लोगों ने मीडिया वालों को बुलाया और बच्चों ने उन्हें बताया कि यहां पर आए दिन बच्चों को गाड़ी वाले मारकर चले जाते हैं। वह रूककर बच्चों को देखते भी नहीं हैं कि बच्चे को कहां चोट आई है। निगरानी के लिए इस रोड पर ट्रैफिक पुलिस वाले भी नहीं होते हैं। इस मौके का लोग फायदा उठाते हैं और बच्चों को टक्कर मारकर भाग जाते हैं। बालकनाम के पत्रकार से बच्चों ने कहा कि हम बच्चे चाहते हैं कि इस समस्या पर समाधान हो और दिल्ली सरकार इस समस्या पर कोई संज्ञान जरूर ले।

दूसरों के लिए पूजा बनी मिसाल

अपने जन्मदिन पर अपने ही जैसे बच्चों को दिया तोहफा

बातूनी रिपोर्टर पूजा, रिपोर्टर चेतन

15 वर्षीय पूजा पश्चिमी दिल्ली की वाल्मीकि कैंप में रहती है। पूजा उन्हीं बच्चों में से एक है जो बच्चे रात दिन मेहनत मजदूरी करते हैं और अपनी पढ़ाई पूरी करते हैं। पूजा भी स्कूल में पढ़ने जाती है और वह बालकनामा अखबार की बातूनी पत्रकार भी है। पूजा जानती है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों का जीवन कैसा होता है और इन बच्चों को किन किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। वह सभी बच्चों को समझाती है कि काम के साथ साथ पढ़ाई करना भी बहुत जरूरी है। वाल्मीकि कैंप में ऐसे बहुत बच्चे

हैं, जिनके पास शरीर पर पहनने के लिए कपड़े तक नहीं हैं। ऐसे बच्चों को जब पूजा ने देखा तो उसने सोंचा क्यों न मैं अपने कुछ कपड़ें इन बच्चों को दे दूं जिससे बच्चों की थोड़ी मदद हो जाए। इसलिए पूजा ने अपने जन्मदिन पर इन बच्चों को बुलाया और इनके साथ अपना जन्मदिन बडी धूमधाम के साथ मनाया और अपने जन्मदिन के बहाने इन बच्चों को अपने कुछ कपड़े भी बांटे।

बालकनामा पत्रकार ने पूजा से पूछा कि तुमने अपने जन्मदिन पर ही इन बच्चों को अपने वस्त्र क्यों दिए तो पूजा ने बताया कि भैया मैंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि मैं अपने जैसे बच्चों की मदद करना चाहती थी और बिल्कुल भी यह नहीं जताना चाहती थी कि मैं उन पर दया कर रही हूं। ऐसा करने से हम बच्चों को बहुत ठेस पहुंचती है क्योंकि मैं भी इन्हीं बच्चों में से एक हूं। मुझसे जैसे भी होता मैं अपने जैसे बच्चों की मदद करती हूं। इससे मुझे बहुत खुशी मिलती है और मेरे साथ साथ दूसरे बच्चे भी बहुत खुश होते हैं। पूजा का कहना है कि जिस तरह मैंने एक बच्ची होकर बच्चों की मदद की है उसी तरह बड़े बड़े लोग भी सड़क एवं कामकाजी बच्चों की मदद कर सकते हैं। ऐसा करने से जिन बच्चों के पास पहनने के लिए कपड़े नहीं हैं, उन्हें कपड़े मिल सकेंगे। मैंने तो बच्चों की मदद करने की शुरूआत कर दी है, आप कब करेंगे।

माता पिता के जैसी जिम्मेदारी निभा रहे हैं छोटे बच्चे

बातूनी रिपोर्टर कसीना, रिपोर्टर चेतन

कहा जाता है कि माता पिता अपने बच्चों की परवरिश बड़ी खुशी से करते हैं और अपने बच्चों का पूरा ध्यान रखते हैं। लेकिन इस मामले में ऐसा बिलकुल नहीं हो रहा है क्योंकि कुछ माता पिता संतान तो पैदा करते हैं लेकिन उस संतान का बोझ अपने बच्चों पर ही डाल देते हैं और खुद दोनों कमाने के लिए अपने घरों से निकल पड़ते हैं। जैसे ही छोटे बच्चे लगभग 12 साल के होते हैं। वह अपने से छोटे भाई बहनों का पूरे दिन घर में रहकर उनका ध्यान रखते हैं। माता पिता द्वारा इन बच्चों पर इतनी जिम्मेदारी दे दी जाती है कि अपने भाई बहनों का ध्यान रखने के साथ पूरे घर का कामकाज करते हैं और छोटे भाई बहन का पालन पोषण करते हैं। इसलिए इन बच्चों का शारीरिक विकास पूर्ण रूप से नहीं हो पाता है।

कमला नेहरू कैम्प के रहने वाली लगभग 11 साल की कसीना अपने घर में चार छोटे छोटे भाई बहनों का पालन पोषण कर रही है। कसीना को इनकी पूरी देखभाल करनी पड़ती है। अगर यह ऐसा नहीं करेगी तो इसके परिवार वाले भला बुरा कहते हैं। कसीना सुबह सुबह उठकर खाना बनाती है। इसके माता पिता दोनों काम पर चले जाते हैं। उसके बाद कसीना सुबह से लेकर शाम तक अपने भाई बहनों की देखरेख करती है। इसका एक भाई दो साल का है, जिसे यह पूरे दिन गोद में लिए इधर से उधर घुमाती रहती है और जिम्मेदारी के साथ इन्हें नहलाना धुलाना और समय से खाना खिलाना। कसीना इसमें इतनी व्यस्त रहती है कि घर छोड़कर कहीं और नहीं जा पाती है। इस तरह से जब माता पिता अपने बच्चों पर हद से ज्यादा भार डाल देते हैं तो बच्चों का पूर्ण रूप से शारीरिक विकास नहीं हो पाता है।

मां बाप के बिना सूनी है दुनियां

बातूनी रिपोर्टर मुस्कान, रिपोर्टर चेतन

हर एक बच्चे को अपने माता पिता के साथ रहने का पूरा अधिकार है। बच्चों को माता पिता के साथ घुल मिलकर रहना चाहिए। हम जिस बच्चे की बात कर रहे हैं उसका नाम अल्का है। अल्का अपने परिवार की एकलौती बेटी है। वह 11 साल की है और अपनी मौसी के साथ रहती है। अल्का भी चाहती कि मैं भी पढाई करूं। पर वह क्या करे वह मजबूर है क्योंकि उसको अपनी मौसी के साथ शहीद कैम्प में रहना पड़ता है। जब बच्चों का सहारा समाज में कोई नहीं रहता है तो वह बिल्कुल अकेले हो जाते हैं। अल्का की स्थिति भी कुछ ऐसी ही है। अल्का के माता पिता नहीं हैं। वह अपनी मौसी के साथ रहती है। वह स्कूल नहीं जाती है। वह दिनभर घर के आस पास घूमती रहती है और सहेलियों के साथ खेलती रहती है। अल्का जब दूसरे बच्चों को स्कूल जाते देखती है तो उसके मन में भी पढाई करने की इच्छा होती है। लेकिन कुछ कहती नहीं है। बस दूसरे बच्चों को स्कूल जाते हुए देखती रहती है। अल्का को उसकी जरूरत का सामान भी नहीं मिल पाता है। अल्का भले ही अपनी मौसी के साथ रहती है पर वह अपने आपको अकेला महसूस करती है। दुनिया में जब बच्चों के माता पिता उसके पास नहीं होते हैं तो बच्चे अकेलापन महसूस करते हैं। अल्का ने पत्रकार से कहा कि शिक्षित होना बहुत जरूरी है।

परिवार के लिए बच्चों को करना पड़ता है मेहनत मजदूरी

बातूनी रिपोर्टर अंकित, रिपोर्टर पूनम

यह कहानी 13 वर्ष के अंकित की है। अंकित के दो भाई बहन है। यह अपने माता पिता के साथ रहते हैं। अंकित की मम्मी की अकसर तबियत खराब रहती है। उसके पापा बेलदारी का काम करते हैं जो भी पैसे कमाते हैं, उन पैसों से अंकित के पापा शराब पी जाते हैं और एक भी पैसा वह अपने घर में नहीं देते हैं। इसी वजह से कुछ महीने पहले अंकित अपने गांव पटना से कुछ लोगों के साथ आगरा शहर आ गया और बिजली घर के पास चिलंगन वाल्मीकि बस्ती में रहता है। यहां पर वह अपने परिवार का खर्च चलाने के लिए पायल पर पॉलिस करने का काम करने

लगा। इस काम में अंकित को प्रतिमाह दो हजार रुपए मिल जाते हैं।

जब बालकनामा के पत्रकार पूनम को यह पता चला तो वह अंकित से मिलने गई। अंकित ने पत्रकार को बताया कि मैं एक सूर्य एम.ओ.एस. रॉयल कम्पनी में काम करता हूं। पायल साफ करने के लिए कम्पनी एक पाउडर देती है और तेजाब देती है। जिससे पायल साफ करते हैं। हम सबसे पहले एक ढक्कन तेजाब लेते हैं और उसमें पायल को डाल देते हैं। उसके बाद उस पायल को अपने हाथ में लेकर ब्रश से रगड़ते हैं जिससे पायल साफ हो जाती है। पायल में चमक आ जाती है। अंकित ने पत्रकार से कहा कि अगर मैं यह काम नहीं करूंगा तो मेरे घर का खर्चा कैसे चलेगा और मैं अपनी मम्मी की दवाई कहां से लाऊंगा, भाई बहन भी भूखे रह जाएंगे। पत्रकार ने अंकित को चाल्डलाइन नम्बर 1098 के बारे में बताया कि इस नंबर पर फ्री कॉल कर सकते हैं। चाइडलाइन द्वारा तुम्हारी पूरी तरह से मदद की जाएगी।

यौन शोषण के खिलाफ उठाई आवाज

पृष्ठ 1 का शेष

रहती हैं जब उनके माता पिता अपने काम के लिए चले जाते हैं तब उनके रिश्तेदार और आस पड़ोस के लोग उस लड़की को अकेला देखकर उसके साथ यौन शोषण करते हैं। इस बारे में जब लड़की अपने माता पिता से बताती है तो उसके माता पिता भी अपनी लड़की का यकीन नहीं करते हैं सिर्फ यह कहकर चुप करा देते हैं कि इस बात को किसी और से नहीं बताना वरना हमारी बदनामी होगी और घर की इज्जत खराब हो जाएगी।

युवती - एक आदमी ने मेरा एक साल तक पीछा किया इस बारे में मुझे पता नहीं था। लेकिन एक दिन उसने मुझे प्रपोज किया तो मुझे पता चला कि वह पिछले एक साल से मेरा पीछा कर रहा था। यह सुनते ही मैं चैंक गई और मैं इतनी डर गई कि मैं कई दिनों तक घर से बाहर ही नहीं निकली।

युवक - कुछ लड़के जिनकी भावना पूरी तरह लड़कों जैसी नहीं होती है वह दूसरे लड़कों से अश्लील हरकत करवाने के लिए उकसाते हैं, उन्हें गंदे इशारे करते हैं, अश्लील फिल्म दिखाते हैं, उनके व्यक्तिगत भागों को छूते हैं तथा पैसों का लालच देते हैं और कई बार उनकी खुद की वीडिओ बनाकर उनको ब्लैकमेल करते हैं और उनसे बार बार अश्लील हरकते करवाते हैं।

युवती - मेरे दोस्त ने चलती बस में यौन शोषण के खिलाफ आवाज उठाई और मैंने भी उसका साथ दिया। जब हम बस स्टैंड पर उतरे तो उसी बस स्टैंड पर वह लड़का भी उतर गया जो हमारे साथ गलत व्यवहार कर रहा था। उसने अपने दोस्तों को फोन किया और हमसे बदला लेने के लिए दोस्तों को बुलाया। उन लड़कों ने हमें चारो तरफ से घेर लिया। उस वक्त शाम हो चुकी थी और अंधेरा भी हो गया था। हम बहुत डर गए थे, लेकिन हमने किसी तरह हिम्मत कर पुलिस स्टेशन पहुंचकर उनकी शिकायत की और उन्हें पुलिस से पकड़वाया।

युवक - जो लड़के कंपनियों में काम करते हैं उनके ठेकेदार उनसे कहते हैं कि अगर तुम मेरे साथ अश्लील हरकत करने को तैयार होते हो तो मैं तुमसे ज्यादा काम नहीं करवाऊंगा और पैसे भी ज्यादा दूंगा। अगर इस बारे में तुमने किसी को बताया तो मैं तुम्हारे ऊपर चोरी का इल्जाम लगा कर पुलिस से पकड़वा दूंगा, जिससे तुम्हारी नौकरी भी चली जाएगी और कोई भी व्यक्ति तुम्हारा विश्वास नहीं करेगा।

युवती - हमारे इलाके में लड़के लड़कियों को आते जाते बहुत तंग करते हैं। इसलिए हम लड़कियां बाहर नहीं निकल पाती। हम अपने काम के लिए जब बाहर जाते हैं तो अपने घर के सदस्यों के साथ जाते हैं, क्योंकि हमारे यहां किसी प्रकार की कोई सुविधा नहीं है।

युवक - लड़कों के साथ भी यौन शोषण अलग अलग प्रकार से किया जाता है जैसे छोटे लड़कों के वस्त्र उतारकर उनकी वीडिओ बनाकर, अपने व्यक्तिगत अंगो को छोटे लड़कों को स्पर्श करवाकर, अश्लील फिल्म दिखाकर, दबाव डालकर, लालच देकर या अश्लील बातें सुनाकर।

युवती - जिनके साथ यौन अत्याचार होता है वह अधिकतर चुप रहते हैं क्योंकि उनकी आवाज कोई नहीं सुनता है। बड़े लोग भी ऐसा करने की इजाजत नहीं देते हैं, क्योंकि वह बेघर हैं बेसहारा हैं। वह किसी की दी हुई छोटी जगह पर तिरपाल डालकर खुले में रहते हैं इसलिए अगर उन लोगों के खिलाफ आवाज उठाई तो वह अपने रहने की जगह भी खो देंगे।

युवक - अगर हम यौन उत्पीड़न के मुद्दे को अपने कार्यस्थल पर उठाएंगे तो हम अपनी नौकरी खो देंगे।

युवती - एक 10 साल की लड़की के साथ यौन शोषण किया गया, क्योंकि उसकी मां का मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं था। वह घर पर नहीं रहती थी, इसलिए उसे अकेला देखकर उसके साथ यौन शोषण किया गया जाता था।

यौन शोषण से बचने के उपाए

- बड़ी संख्या में लड़कों को सुरक्षित करने के लिए रूढ़िवादी मानसिकता वाले लड़कों से बात करना चाहिए जो यह कहते हैं कि लड़कों के साथ यौन शोषण नहीं हो सकता।
- हमें इस तरह की मीटिंग पुलिस के साथ भी करनी चाहिए ताकि उन्हें भी जानकारी हो कि लड़कों के साथ भी यौन शोषण होता है और वह भी लड़कों के साथ हुए यौन शोषण के केस को फाइल करें।
- जो लोग यौन शोषण करते हैं उनको व्यस्त रखने के लिए काउंसलिंग सेंटर होने चाहिए, जहां उन्हें यह शिक्षा दी जाए कि जो यौन शोषण के शिकार होते हैं, उन्हें क्या क्या पीड़ा होती हैं।
- सभी लड़कियों को अपने आप को सुरक्षित रखने के लिए आत्म रक्षा का प्रक्षिशण लेना चाहिए।
- हमें एक ऐसी प्रणाली बनानी चाहिए, जिससे लड़कियों में साहस आए ताकि वह अपनी चुप्पी तोड़ सकें।
- संचार नेटवर्किंग और मजबूत करनी चाहिए।
- बच्चों को एकजुट होकर यौन शौषण के खिलाफ लड़ाई लड़नी चाहिए।
- अपनी आवाज उठानी चाहिए और उस चुप्पी को तोड़ना चाहिए जो हमें कमजोर बनाती है।
- अधिक से अधिक विचार विमर्श करने की जरूरत है।
- हमने ऐसी मीटिंग में पहली बार भाग लिया है। हम यह मीटिंग आगे भी कर सकते हैं सबके सामने ताकि जो लड़के हमें परेशान करते हैं उन्हें भी पता चले कि अब हम चुप नहीं रहेंगे।
- किसी को मदद की जरूरत हो तो उसकी मदद जरूर करनी चाहिए।
- हम अपनी कहानियां लिख सकते हैं ताकि लोग हमारे संघर्ष के बारे में जान सके।
- हमें सामूहिक जागरूकता लानी होगी और लोगों को यह बताना होगा कि इस काम में हम अकेले नहीं हैं, बहुत लोग हमारे साथ हैं, जो सामूहिक रूप से हमारा सहयोग कर सकते हैं।

भोलू के चेहरे पर आई मुस्कान

बातूनी रिपोर्टर भोलू, रिपोर्टर ज्योति

माता पिता ही अपने बच्चों से जबरन काम करावाते हैं। वह अपनी गलत आदतों से मजबूर होकर अपने बच्चों को काम करने के आखाड़े में उतार देते हैं जैसे मानो माता पिता के लिए उनके बच्चे एक पैसे कमाने का जरिया बनते जा रहे हों। कुछ माता पिता शराब का सेवन प्रतिदिन करते हैं और शराब पीने के लिए उन्हें हर दिन पैसे चाहिए होते हैं। कुछ बच्चों के माता पिता सुबह से ही शराब पीकर बैठ जाते हैं और पैसे कमाने के लिए अपने बच्चों को पूरे दिन कबाड़ा बीनने के लिए भेज देते हैं।

भोलू 12 साल का है और अपने परिवार के साथ सराए काले खां पुल के नीचे रहता है। भोलू के पिता जी भी उसे जबरन काम करने के लिए भेजते हैं और उसकी माता भी कबाड़ा चुनने जाती हैं। भोलू के पिता भी बहुत शराब पीते हैं। इसलिए भोलू को पढ़ाई लिखाई

नहीं करने देते और कहते हैं कि अगर तुम पढ़ने जाओगे तो पैसे कमाकर कौन लाएगा और मैं शराब कहां से पीयुंगा। इसलिए भोलू मजबूरन सारे दिन कबाड़ा चुनकर, भीख मांगकर पैसे लाता है। उसके पिता उसके कमाए हुए सारे पैसे लेकर उसकी शराब पी ले लेते हैं। पैसे खत्म होने के कारण भोलू के भाई . बहनों को कभी .कभी रात को भूखे भी सोना पड़ता है।

भोलू के पिता अपने किसी भी बच्चे को पढ़ने नहीं देते। बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने उसके पिता से बात की, कि आप अपने बच्चों को पढ़ने क्यों नहीं भेजते हो, अगर आप अपने बच्चों को पढ़ाई करने नहीं भेजोगे तो मैं चाइल्डलाइन को फोन करके आप को जेल में बंद करा सकती हूं। यह बात सुनते ही भोलू के पापा डर गए और पत्रकार से बोले कि आज के बाद मैं अपने बच्चों को रोज सेंटर में पढ़ाई करने के लिए भेजुंगा और जब इनका दाखिला स्कूल में हो जाएगा तो इन्हें स्कूल भी भेजुंगा। यह सुनते ही भोलू के चेहरे पर मुस्कान आ गई।

हकीम ने स्टेशन छोड़कर स्कूल में पढ़ने का किया वादा

रिपोर्टर ज्योति

मां बाप की लापरवाही की वजह से बच्चे गलत आदतों में फंस जाते हैं। ऐसे ही 12 वर्षीय हकीम पहले सरकारी स्कूल में कक्षा 6 में पढाता था, लेकिन उसके मम्मी पापा का व्यवहार हकीम के प्रति ठीक न होने की वजह से वह स्टेशन पर जाकर कबाड़ा चुनना सीख गया। स्टेशन पर रहने के कारण धीरे. धीरे वह नशे की अंधेरी दुनिया में फंसता चला गया। बालकनामा के पत्रकार को किसी बच्चे द्वारा हकीम के बारे में पता चला तो उसी वक्त पत्रकार ने हकीम से बातचीत की, कि आप स्कूल छोड़कर नशा करने लगे और स्कूल जाना भी बंद कर दिया और ऐसा क्यों कर रहे हो? तो हकीम ने पत्रकार को रोते हुए बताया कि दीदी मेरे पापा मम्मी मुझे स्कूल जाने के लिए कुछ भी खर्च नहीं देते थे तो आप ही बताइए मैं कॉपी पेन कहां से लाऊंगा। इसलिए मैंने स्टेशन का रास्ता चुना और खाली बोतलें बीनकर उन्हें कबाड़े की दुकानों में बेचने लगा। जिससे मेरे पास चार पैसे आ जाते हैं। मुझे रेल गाड़ी में से अच्छा. अच्छा खाना भी मिल जाता है।

लेकिन दुख की बात यह है कि जो भी बड़े बड़े लड़के यहां पर रहते हैं वह हम बच्चों को जबरदस्ती नशा करना सिखा देते हैं। अगर कोई नशा करने से

मना करता है तो वह बच्चों को मारते हैं। हम बच्चों के साथ शोषण भी करते हैं फिर चाहे वह लड़का हो या लड़की। पुलिस वाले भी बहुत परेशान करते हैं। पत्रकार ज्योति ने हकीम को बताया कि यहां पर भले ही दो पैसे मिल जाते हैं, अच्छा खाना मिल जाता है, लेकिन इस काम को करने के बाद यहां बच्चे नशे की लत में फंस जाते हैं, इससे अच्छा है कि आप स्कूल जाओ अगर कोई परेशानी होती है तो मैं आपके पापा मम्मी से बात करूंगी। फिर हकीम ने पत्रकार ज्योति से वादा किया कि मैं अब से स्कूल जाऊंगा और स्टेशन पर कबाड़ा बीनने नहीं जाऊंगा।

पूनम की मदद से पूजा पहुंची अपने घर

बातूनी रिपोर्टर पूनम, रिपोर्टर ज्योति

12 वर्षीय पूनम बढते कदम की सदस्य है और बालकनामा की बातूनी रिपोर्टर भी है। पत्रकार ज्योति ने सांसी कैम्प में बच्चों के साथ सपोर्ट ग्रुप मीटिंग की और पूनम भी इसी मीटिंग में शामिल हुई। पूनम ने बताया कि दीदी जब दशहरा चल रहा था तब कन्यां खाने के लिए कुछ बच्चे आए थे, उसमें पूजा नाम की एक लड़की थी, जो बदर बॉर्डर से आई थी। वह इधर उधर भटक रही थी उस समय मेरी नजर पूजा पर पड़ी तो मैंने पूजा से बात की। पूजा ने बताया कि मैं कन्यां खाने के लिए आई थी, लेकिन मैं रास्ता भटक गई हूं। मुझे नहीं पता कि अपने घर कैसे जाना है। यह कह कर वह जोर जोर से रोने लगी। फिर मैंने पूजा से पूछा कि आप याद करो कि आप किस तरफ रहते हो। मैं कोशिश करूंगी कि आपको घर छोड़ने की। तो पूजा ने थोड़ी देर बाद बताया कि वह बदरपुर

बॉर्डर की तरफ रहती है। इससे ज्यादा पूजा कुछ नहीं बता पा रही थी, बस डर रही थी और बार बार यह कह रही थी कि मैं अपनी सहेली के साथ कन्यां खाने के लिए आई थी गलती से बिछड़ गई हूं। आप मेरी मदद कीजिए।

मैं पूजा को उसके घर छोड़ने बदरपुर के रास्ते पर गई और पूजा का घर ढूंढना शुरू किया। बहुत देर बाद पूजा का घर मिला और मैंने पूजा को उसके घर छोड़ दिया। जब मैंने पूजा का घर ढूंढ लिया तो देखा कि पूजा की मम्मी घर में बैठी बहुत रो रही है थी। उन्होंने जैसे ही पूजा को देखा तो दौड़कर आई और पूजा को गले से लगा लिया और कहने लगी कि तू कहां पर रह गई थी। फिर पूनम ने पूजा की मम्मी को समझाया कि आप अपनी बेटी को कहीं पर अकेले मत भेजा करो। अगर आपकी बेटी सचमुच नहीं मिलती तो क्या होता? आप क्या करते? वैसे भी सांसी कैम्प में बहुत तेज ट्रेन चलती हैं, कोई दुर्घटना हो जाती तो? पूजा की मम्मी ने कहा कि ठीक है बेटा अब से मैं अपनी बेटी को कहीं पर भी अकेले नही भेजूंगी। धन्यवाद बेटी जो आप ने मेरी बेटी की मदद की।

चिकनगुनियां से सड़क एवं कामकाजी बच्चे कैसे कर रहें हैं अपना बचाव

पृष्ठ 1 का शेष

काटता है तो वह मच्छर खुद मर जाते हैं। इसलिए हम बच्चों को मच्छरों से होने वाली बीमारियां नहीं होती है।

16 साल के अजीत ने बताया कि हम बच्चे जहां पर सोते हैं वहां इतनी गंदगी होती है कि कोई वहां खड़ा भी नहीं हो सकता, लेकिन वो हमारे सोने की जगह होती है और डेंगू का मच्छर तो साफ पानी और साफ जगह में ही पैदा होता है और हम बच्चे तो बहुत गंदी बदबूदार जगह में रहते हैं। यहां मच्छर नहीं आते हैं।

पुल के नीचे रहने वाले 16 वर्षीय सुनील ने बताया कि जब हम बच्चे रात को सोते हैं तो मुबील का तेल अपने शरीर पर लगा लेते हैं जिससे हमें मच्छर नहीं काटते हैं और जो बच्चे यह तेल नहीं लगाते हैं तो भी मच्छर उन्हें नहीं काटते हैं क्योंकि जिस जगह हम सोते हैं पुल के नीचे उस जगह पर वाहन बहुत तेजी से चलते हैं जिसकी तेज हवा और गाड़ी से निकलते धुएं की चपेट में आकर मच्छर मर जाते हैं। इसलिए हम

बहुत कम मच्छर से होने वाली बीमारियों की चपेट में आते हैं। लेकिन जो बच्चे कॉलोनियों में रहते हैं और काम करते हैं वह इस बीमारी से असुरिक्षत हैं। इस बारे में एम. सी.डी. ने भी कुछ नहीं सोंचा। पहले जब कभी इस तरह हुआ है तो एक दो बार मच्छर भगाने की दवाई छोड़ी जाती थी, लेकिन इस बार यह बहुत कम देखने को मिला है।

पहले की तरह इस बार ऐसा नहीं हुआ, जिसके कारण लोग इसके शिकार हो रहे हैं। अगर दिल्ली सरकार पहले से ही यह तैयारी रखती और हर रोज जा जाकर मच्छर भगाने की दवाई छोड़ती तो यह बीमारी ज्यादा नहीं फैलती।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

चंदन की हिम्मत को सलाम

रिपोर्टर शम्भू

12 वर्षीय चंदन अपने परिवार के साथ पश्चिमी दिल्ली के चूना भट्टी में रहता है। उसके पिता जी का नाम दिनेश ठाकुर है और मम्मी का नाम मीरा देवी है। चंदन की मम्मी अपने घर का खर्चा चलाने के लिए दूसरे के घरों में काम करने जाती हैं। उन्हें इस काम में प्रतिमाह तीन हजार रुपए मिलते हैं। पहले चंदन सरकारी स्कूल में पढ़ने जाता था और कक्षा 6 में पढ़ता था वह पढ़ाई करने में हमेशा आगे रहता था और हमेशा अपनी कक्षा में फस्ट आता था। चंदन बहुत होनहार लड़का है और वह दूसरे बच्चों की मदद भी करता है। एक दिन की बात है कि पार्क में एक बच्चा झूला झूल रहा था। अचानक वह बच्चा झूले से नीचे गिर गया। चंदन दौड़कर उसके पास गया तो देखा कि उसे बहुत चोट आई थी। चंदन बच्चे को अस्पताल ले गया। अस्पताल के डॉक्टर ने उसे देखा तो उस बच्चे के पैर में बहुत चोट आई थी। डॉक्टर ने उसके पैर में पट्टी बांधी और टिटनेस का इंजेक्शन लगाया और कुछ जख्म सूखने की दवाईयां दी।

चंदन ने पत्रकार को बताया कि मैं जब स्कूल में पढ़ने जाता था तो इस तरह दूसरे बच्चों की मदद करता रहता था, लेकिन मेरा स्कूल छूट गया। क्योंकि जब मेरे पिता जी का देहांत हुआ तो मुझे अपने पिता जी को कांधा देने के लिए अपने गांव जाना पड़ा और इस वजह से मेरा स्कूल में से नाम काट दिया गया। उसके बाद से ही मैं फिर कभी स्कूल न जा सका और कुछ दिन के बाद मैं बिहार से अपने मामा मामी के साथ दिल्ली आ गया। दिल्ली में आकर दो पैसे कमाने के लिए कबाड़ा बिनने लगा। लेकिन जब मैं चेतना संस्था के कार्यकर्ता से मिला और अपने बारे में बताया कि मैं स्कूल में दोबारा जाना चाहता हूं तो चेतना संस्था के कार्यकर्ता ने यह जिम्मेदारी उठाई है कि मेरा दोबारा स्कूल में दाखिला करवाएंगे। मैं अब दोबारा स्कूल पढ़ने जा सकूंगा। मैं अब बहुत खुश हूं कि बढ़ते कदम संगठन से जुड़ने के बाद मुझे दोबारा पढ़ने का अवसर मिल रहा है। अब मैं काम के साथ साथ पढ़ाई भी पूरी कर सकूंगा ।

नशे की आदी लड़कियों को नशे का लालच देकर करते हैं अश्लील हरकतें

बालकनामा ब्यूरो

पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन पर रहने वाली 14 से 18 साल तक की लड़कियां खतरनांक नशे की चंगुल में फंसती जा रही हैं। बालकनामा के पत्रकार ने इस विषय पर 20 लडकियों से बात की, जो रात दिन नशे में लिप्त रहती हैं और अलग अलग प्रकार के खतरनांक नशे का सेवन कर रही हैं। 17 वर्षीय अनुराधा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम सभी लड़कियां ड्रग्स, चरस और स्मैक का नशा करती हैं। हम यह खतरनांक नशा चांदनी चैक से खरीदकर लाते हैं और जो व्यक्ति इस खतरनांक नशे को बेचने आता है उस व्यक्ति का हुलिया दिखने में बिल्कुल अलग होता है। अनुराधा ने बताया कि उस व्यक्ति को बस हम लड़कियां ही जानती हैं, जिसे हम ड्रग्स और स्मैक, चरस खरीदने के लिए 300 से 400 रुपए की एक छोटी सी पुड़िया मिलती है। इस पुड़िया में थोडा सा ही नशा रहता है। जब हम नशा खरीदकर ले आते हैं उसके बाद हम एक जगह बैठकर इसको सूंघते हैं।

16 वर्षीय कंचन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि यहां पर लगभग 20 से 30 लड़कियां हैं, जो इस प्रकार का नशा करती हैं। पत्रकार ने पूंछा कि आप लोग यह नशा क्यों करते हो? तो उन्होंने बताया कि हम लोग किसी कारण से अपने घरों से भागकर यहां पर आ जाते हैं और तभी हम इधर उधर भटकते हुए रेलवे स्टेशन पर आ जाते हैं।

यहां आने के बाद जो लड़कियां पहले से नशा करती रहती हैं, वह हमें नशा करना सिखा देती हैं। यह नशा ऐसा है कि अगर लड़की गलती से इस नशे का उपयोग एक से दो बार कर ले तो इसकी आदी हो जाती हैं और इस नशे की लत के कारण नशा करने के लिए हम लड़कियां किसी भी हद तक चली जाती हैं। हमारा मन करता है कि हम और नशा करें। जब हमें भूख लगती है तो हम खाना नहीं खाते, बल्कि चरस और स्मैक का नशा ही लेते हैं।

इस खतरनांक नशे में लिप्त होने के कारण हम लड़कियों के साथ यहां कई प्रकार का शोषण किया जाता हैं और जो बड़े बड़े लड़के स्टेशन पर रहते हैं वह हम लड़कियों को नशे का लालच देकर और नशे में धुत करके हमें सिनेमा हॉल फिल्म दिखाने के लिए ले जाते हैं। सिनेमा हॉल में ले जाकर वह हमारे साथ अश्लील हरकतें करते हैं, इधर उधर हाथ लगाते हैं। हम नशे में इतने धुत होते हैं कि कुछ बोल तक नहीं पाते हैं। जब हमें होश आता है तो पता चलता है कि हमारे साथ क्या हुआ था। इसके साथ जो कोई नई लड़की अगर यहां आती है और जब वह रात को सो जाती है तो उन लड़कियों के साथ भी यह बड़े बड़े लड़के यौन शोषण करते हैं। इस प्रकार की अश्लील हरकतें लड़कियों के साथ बढ़ती जा रही हैं। वह नशा करने के बाद बहुत असुरक्षित हो जाती हैं।

पत्रकार ने सभी लड़कियों को समझाते हुए कहा कि आप नशा छोड़ती क्यों नहीं हैं? 15 वर्षीय सपना (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हम बहुत कोशिश करते हैं नशा छोड़ने की मगर हम से नशा छूटता ही नहीं है। जब हम एक दिन नशा नहीं करते हैं तो सिर में दर्द होता है। ऐसा लगता है कि सिर फटकर नींचे आ जाएगा। इसलिए हम नशा करते हैं और यह नशा हमें कैसे भी करके खरीदना पड़ता है। अगर एक दिन हम खाना नहीं खाएंगे तो चलेगा मगर नशा नहीं मिलेगा तो हम मर ही जाएंगे। हम लोगों ने काफी कोशिश की इस दलदल से बाहर निकलने की लेकिन हम निकल नहीं पा रहे हैं।

लाल बत्ती पर काम कराने के लिए लाए गए और नए चेहरे

बालकनामा ब्यूरो

छोटे छोटे 35 और मासूम बच्चों को पढ़ाई कराने के बहाने से बहला फुसला कर दिल्ली की लाल बत्ती पर सामान बेचने पर लगाया गया है। पत्रकार ने लाल बत्ती पर काम करने वाले बच्चों से मींटिग के दौरान बातचीत की। पत्रकार ने उन बच्चों से पूंछा कि आप लोग लाल बत्ती पर काम क्यों करते हो? 16 वर्षीय मनीष (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भईया हम बच्चे अपनी मर्जी से काम नहीं करते हैं। हम बच्चों का एक मालिक है जो बिहार का रहने वाला है। उसने हमारे माता पिता को यह लालच दिया था कि वह बच्चों को दिल्ली में ले जाकर पढ़ाई लिखाई करवाएगा और साथ ही प्रतिमाह पैसे भी देगा।

15 वर्षीय पवन (परिवर्तित नाम) ने बताया कि भैया हम बच्चों का परिवार बहुत गरीब है और जानकार भी नहीं है। इसलिए इस व्यक्ति के झांसे में आकर हमारे माता-पिता ने हमें उसके साथ दिल्ली भेज दिया था। अभी हम बच्चों को कोटला में रखा है। कोटला में बच्चे अपने से ही खाना पीना बनाते हैं और सुबह 6 बजे उठकर रात 8 बजे तक दिल्ली की अलग अलग लाल बत्ती पर जाकर सामान बेचते हैं। हम पांच लड़कों का एक ग्रुप बना होता है। एक ग्रुप को एक लालबत्ती की जगह दे दी जाती है। पूरी प्लानिंग करके मालिक इन्हें लालबत्ती पर सामान बेचने के लिए भेजता है। बच्चे अलग अलग प्रकार का सामान लालबत्ती पर बेचते हैं, जैसे गाड़ी साफ करने वाले डस्टरए मोबाईल चार्जरए खेल खिलौन आदि। राहुल ने बताया कि हम बच्चे सुबह आठ बजे से लेकर रात को दस बजे तक सामान बेचते हैं।

हमारे पास बेचने के लिए आठ नौ किलो सामान लदा होता है, जिसे लेकर हम लालबत्ती पर इधर उधर जाकर बेचते हैं। वजन उठा उठा कर हम बुरी तरह थक जाते हैं। जब लालबत्ती पर वाहन रूकते हैं वैसे ही यह बच्चे वाहन चलाने वालों के पास दौड़कर जाते हैं। इस प्रकार बच्चे अपना सामान बेचते हैं। कार साफ करने वाला एक डस्टर 40 रुपए का बेचते हैं, मोबाईल चार्जर 120 रुपए का। इस तरह अलग अलग सामान का अलग अलग रेट होता है।

15 वर्षीय अमर (परिवर्तित नाम) ने बताया कि पुलिस हमें लाल बत्ती पर से मार कर भगा देते हैं। उस दिन हमारा सामान नहीं बिकता है तो हमारा मालिक हम बच्चों को गाली देता है और मारता भी है। इसलिए हमें ओवर टाइम काम करना पड़ता है और इस तरह हम अपने घर हर महीने पैसे भेज पाते हैं।

अश्लील वीडिओ देखने के लिए ही बच्चे नहीं बीनते हैं कबाड़ा

बालकनामा ने किया खंडन

बातूनी रिपोर्टर राहुल, रिपोर्टर शम्भू

अभी कुछ दिन पहले ही प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक अखबार के द्वारा कबाड़ा बीनने वाले बच्चों के ऊपर एक खबर उजागर की गई थी, जिसके मुताबिक यह कहा गया है कि सराय काले खां में रहने वाले बच्चे अश्लील वीडियो देखने के लिए ही कबाड़ा बीनने का काम करते हैं। इस खबर के बारे में जब बढ़ते कदम संगठन के सदस्यों को पता चला तो उन्होंने इस बात का खंडन करते हुए कबाड़ा बीनने वाले बच्चों से बातचीत की।

बढ़ते कदम की राष्ट्रीय सचिव ज्योति ने बच्चों के हित में बात रखते हुए कहा कि मैं भी पहले कबाड़ा बीनती थी, लेकिन मुझे उस समय यह पता ही नहीं था कि अश्लील फिल्म क्या होती है। हम बच्चों को यह तक जानकारी नहीं होती है कि हमारे आस पास क्या हो रहा है। राहुल जो 14 साल का है वह सराय काले खां में कबाड़ा बीनने का काम करता है। उसने बताया कि हम बच्चे अपना पेट पालने के लिए कबाड़ा बीनते हैं और दूर दूर तक हमारे जेहन में ऐसी कोई बात ही नहीं आती है कि जिससे हम गलत

आदतों में फंस जाएं। हम दिनभर कड़ी धूप में मेहनत करके कबाड़ा बीनते हैं तब जाकर हमारे पेट में अन्न जाता है। यह कहना तो बिल्कुल गलत होगा कि हम सिर्फ इसलिए कबाड़ा बीनते हैं क्योंकि हमें अश्लील फिल्म देखना है।

हम बच्चों के बारे में अगर इस तरह की खबरें उजागर की जाएंगी तो इससे हमारे जीवन पर बहुत बुरा असर पड़ेगा और हमारे साथ कई प्रकार का शोषण होने का भी खतरा हो सकता है क्योंकि बच्चे पूरे दिन बाहर दूर दूर जगहों में जाकर पब्लिक के बीच कबाड़ा बीनते हैं और पब्लिक तो पहले से ही हम बच्चों से घृणा करती है, गलत नजरों से देखती है। अब तो पब्लिक हमें दूर से देखकर यही समझेगी कि हम बच्चे कबाड़ा बीनने का काम अश्लील वीडियो देखने के लिए ही कर रहे हैं। इससे हमारी जिंदगी पर बहुत बुरा प्रभाव भी पड़ सकता है क्योंकि जो लोग हम बच्चों को देखकर प्रभावित होते हैं वह हमें उसी नजर से देखेंगे कि यह बच्चा कबाड़ा बीन रहा है तो जरूर इसे अश्लील फिल्म देखना होगा तभी यह कबाड़ा बीन रहा है। वह हमारी मजबूरी नहीं समझेगा और हमारा गलत फायदा उठाने की कोशिश करेगा कि चलो हमारे साथ मैं तुम्हें अश्लील वीडियो दिखाऊंगा। तुम्हें कबाड़ा बीनने की जरूरत नहीं है। इस बात को जानते हुए वह शायद हमारा गलत फायदा भी उठा सकते हैं। अब हमेशा हमें इसी बात का डर लगा रहेगा कि कहीं वह व्यक्ति हमसे अश्लील तरीके से बात न करे क्योंकि उसके दिमाग में यही होगा कि हम अश्लील फिल्म देखने के लिए कबाड़ा बीनते हैं और वह कबाड़ा बीनने वाली लड़कियों को अश्लील कमेन्टस पास करेंगे कि अच्छा तुम्हें अश्लील फिल्म देखनी है और वह किसी भी बहाने से अपने साथ ले जाएगा। हर एक इंसान हमें उसी नजर से देखेगा कि अच्छा यह सारे बच्चे अश्लील फिल्म देखने के लिए ही कबाड़ा बीन रहे हैं। इस खबर से लोगों के बीच हमारी गलत पहचान बनेगी इस बात पर बच्चों ने बहुत नराजगी जताई है और कहा है यह कहना बिल्कुल गलत है।

15 वर्षीय राजा रैन बसेरा में रहता है। उसने बताया कि आप यह कह सकते हैं कि जो बड़े लड़के होते हैं वह शायद इस तरह की गलत आदतों में हो सकते हैं, लेकिन वह भी कबाड़ा इसलिए नहीं बीनते हैं क्योंकि उन्हें अश्लील वीडियो देखना होता है, बल्कि वह इस तरह की वीडियो जब देखते हैं जब वह गलत आदतों में फंस जाते हैं या फिर उन्हें उस तरह का गलत संगत वाला माहौल मिलता है। जिसकी वजह से वह इस तरह की गलत आदतों में फंस जाते हैं। अगर हमारे बारे में जानना है कि हम कबाड़ा क्यों बीनते हैं, किस समस्या के चलते हमें मजबूरन काम करना पड़ता है तो जमीनी स्तर पर इसकी जांच पड़ताल करे। उसके बाद उन्हें हकीकत पता चल जाएगी कि क्या हम बच्चे इस तरह की अश्लील वीडियो देखने के लिए काम करते हैं या अपना पेट पालने के लिए। इस बात से कबाड़ा बीनने वाले बच्चों के दिल को बहुत ठेस पहुंची है जो भी बात अखबार द्वारा लोगों के बीच लाई गई है बच्चे इस बात का खंडन करते हैं और इस बात से पूरी तरह से असहमत हैं।

कुत्तों की गणना कर रही है दिल्ली सरकार से सड़क के बच्चों ने भी लगाई गुहार

पृष्ठ 1 का शेष

बच्चों की राय

15 वर्षीय जावेद ने कहा कि अच्छी बात है कि सरकार कुत्तों की गणना कर रही है, इससे इन्हें पता चलेगा कि दिल्ली में कुत्तो की जनसंख्या कितनी है। पर हम बच्चों का क्या हम भी तो उन्हीं कुत्तों के बीच अपना जीवन गुजार रहे हैं। जिस तरह ये बेजुबान अपना दुख दर्द नहीं बता पाते, उसी तरह हम भी अपना दुख बयां नहीं कर सकते। हम भी चाहते हैं कि हमारी गणना की जाए, जिससे हमें एक पहचान मिलेगी।

16 साल की नगमा ने बताया कि अकसर कुत्ते सड़क पर घूमते रहते हैं और कभी कभी लोगों को काट भी लेते हैं।

अच्छा है कि कुत्तों की गणना करके उन्हें एक सुरक्षित जगह पर रखा जाएगा। इस प्रकार वह किसी को हानि भी नहीं पहुंचाएंगे। हम चाहते हैं कि सरकार हमारे बारे में भी सोंचे और हमारी भी गिनती की जाए। इससे शायद बाल मजदूरी भी खत्म की जा सके, जानकारी मिल सके कि कितने बच्चे ट्रैफिकिंग के शिकार हो रहे हैं, कितने बच्चों को अलग अलग कामों में लगा दिया जाता है।

Civic body conducts dog census in South Delhi

POPULATION CONTROL SDMC has given the work to Human Society International India which will finish the task in two months

COUNTING CANINES

The volunteers are conducting the census ward-wise, wherein one volunteer rides a motorbike and the pillion volunteer will using a specially designed mobile app to record data. "The team members are supposed to cover the designated 'driving routes' that have been created by using the boundaries submitted by SDMC," said Dr Amit Chaudhari, of Human Society International India.

The route has been planned keeping in mind various factors like total street length in a ward, density of population and human-dog ratio. HSI India will compile and analyse the data over eight weeks. A report will be submitted with SDMC by October.

SDMC has been running the street dog sterilization programme for more than four years. S BURMAULA / HT PHOTO

Vibha Sharma

International (HSI) India which will finish the task in two months.

RBS Tyagi, director of SDMC's veterinary department.

14 वर्षीय राहुल ने बताया कि यह तो एक बात है कि कुत्तों को सुरक्षा मिलनी चाहिए ताकि आम पब्लिक उन्हें परेशान न कर सके। लेकिन सड़क पर रहने वाली हर एक लड़की और लड़के को हर रोज लोगों के कितने जुल्म सहने पड़ते हैं।

15 वर्षीय आकाश ने बताया कि सरकार ने अभी तक हम सड़क एवं कामकाजी बच्चों की गणना नहीं की है और हम बच्चों की संख्या कितनी है, हम किस प्रकार रह रहे हैं यह जानने के लिए सरकार को हम बच्चों से बात करनी चाहिए तथा हम बच्चों की भी जरूरतों पर ध्यान देना चाहिए ।

बालकनामा के वितरण और अखबार में बच्चों की दिलचस्पी तथा अध्ययन की झलकियां

हम आपके साथ इन पलों से जुड़ी कुछ तस्वीरें शेयर कर रहे हैं...

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471